भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 6	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
बुधवार 26/6/96	जून-1996	प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मप्रवाह

समता और सुहृद्भाव

शास्त्रों में मन को जीतने, चित्त तो निर्मल करने और आखिर आत्मा की शुद्धि के लिए अनेक प्रकार के उपाय, विधियाँ और कर्मकाण्ड-हर एक आचार्य ने बताए हैं- जो सभी जानते हैं। लेकिन ऐसा शुद्धिकरण मूर्तिमान हो पाया नहीं और और वर्षो की तपस्या के बाद भी ऋषि मुनियों की चित्त की वृत्तियों के निरोध को वह विपरीत देशकाल में टिका नहीं पाया। इस तथ्य की शास्त्रों पुष्टि भी करते हैं। इसलिए हम प्रगट रुप में संसार में रहें या नहीं, फिर भी दैवी सम्पत्ति अपने आप बढ़ती जायें और आसुरी वासनाएँ, स्वभाव और प्रकृति टलकर जीते जी आत्मशुद्धि प्राप्त कर लेने श्रीजी महाराज ने सच्चे वड़वानल अग्नि समान सत्पुरुष का समागम ही सर्वोपरि, सर्वोत्कृष्ट साधन बताया है। इसे हमें दृढ़ कर लेना है और हमारे अनादि गुरु गुणातीतानंदजी ने सभी सद्गुणों के राजा को एक ही लक्षण में रख दिया है। सभी जीवात्मा के-प्राणीमात्र के और संत्सग के भी जीव का जीवन जिसे गिना है- वह सभी गुणों के यह राजा का नाम है- 'सुहृद्भाव'। चार बातें जीव का जीवन है। उपासना, आज्ञा, एकांतिक में प्रिति और सुहृद्भाव। इनमें से यदि सुहृद्भाव रहेगा तो बाकी तीन अपने आप दृढ़ होते जायेगें। यह बात प्रगट गुरुजी पूज्य योगीजी महाराज बार-बार जोर डालकर कह रहें हैं। सो, हमारे लिए अंतर्दृष्टि करके बहुत ही विचारने जैसी यह बात है। यह सिद्ध होते, जीते जी निर्गुण सुख की प्राप्ति करवा कर महाराज की दिव्यमूर्ति का सुख सभी को दे सकती है।

जीव का जीवन 'सुहृद्भाव' दृढ़ करने के लिए तीन तत्वों का विकास अनिवार्य बनता है। पहले तो सत्संग में अर्थात् सच्चे सत्पुरुष में आत्मबुद्धि और प्रीती, दूसरा प्रगट की निष्ठा वाले सभी हरिभक्तों में-अरे ! स्वामिनारायण भगवान का शुद्धभाव से नाम लेने वाले की भी अतिशय महिमा समझकर निर्दोषभाव, दिव्यभाव दृढ़ करना।

इससे महाराज और स्वामी का कर्ता, साकार और सर्वोपरि प्रगटभाव समग्र सत्संग में माना जायेगा। फलस्वरुप 'समता ' रुपी बहुत बड़ा गुण प्राप्त होगा और तभी सच्चा 'सुहृद्भाव ' दृढ़ कर पाएगें। आत्मबुद्धि और निर्दोषभाव को लेकर योग के फलस्वरुप की समता स्थितप्रज्ञता जीव में अपने आप प्रगट होती दिखाई देगी। अनुभव होगा और एकांतिकभाव सिद्ध होगा। सारा सत्संग अपना ही माना जाए, एक दुसरे की भूलों को चैतन्य के विकास के लिए महाराज ही साधन बना रहें है-इस तथ्य का दर्शन होते वे भूलें- दोष अपने ऊपर ले सकेगें। विपरित देशकाल के कारण महाराज की आज्ञा में ढीलापन आ गया हो तो एक दूसरे को एकांत में टोक कर कह पायें-ऐसे दिव्य प्रेम की भावना दृढ़ हो वही सच्चा 'सुहृद्भाव'। यूँ समता दृढ़ होने पर आपसी 'सहिष्णुता' रखकर जीने का अभ्यास रखने से ऐसा भाव सहजरुप से प्राप्त होता है। प.पू. सद्गुरुवर्य योगीजी महाराज भी ऐसे ही 'समता'

और 'सहिष्णुताभाव'-देह, मन और बुद्धि से समग्र सत्संग में दिव्य भावना युक्त संग और एकता से जीने बार-बार उनकी बातों में समागम के समय प्रदर्शित करते हैं। यही हमें कर लेना है।

'सहिष्णुता' के बिना प्रगट में जुड़ नहीं सकेंगे। कई गरीब, अनपढ़, अज्ञानमय प्रकृति वाले जीव हों, लेकिन प्रगट के सम्बन्ध वाले हैं, सो दिखाई पड़ती भावनाओं, मान्यताओं को नजरअंदाज करते हुए हमें उसका प्रत्यक्ष सत्पुरुष के प्रति दिव्य प्रेम और भावना जो है, उसकी ओर ही दृष्टि रख कर पीछे हठ कर लेनी चाहिए। जिस प्रकार भी सत्पुरुष में अतिशय लगाव हो वैसे उपाय ढूंढ़ने चाहिए और महिमा गाया करनी चाहिए, जिसमें कि सर्व कर्ता स्वामिश्रीजी बाकी का काम अलौकिक ढंग से संभाल लेगें और हमें धाम का दिव्यता का निर्गुण सुख प्राप्त कराएँगें। ऐसी 'सहिष्णुता' दृढ़ होने के बाद ही सच्चा 'सद्भाव' अंतर में प्रगट हो सकता है। उसके बाद ही मान-अपमान में, हर्ष-शोक में या विपरित देशकल में भी मति पलटेगी नहीं और चित्त की वृत्तियों के निरोध के बिना भी निर्विकल्प समाधि का सुख सहज रुप से मिलता रहेगा। ब्रह्मरुप हुआ हो-उसका चित्त अतिशय प्रसन्न रहता है और राग द्वेष रहित बनकर मूर्ति के बिना और कोई भी आकांक्षा बिना निष्काम भक्तिरुपी जीवन जीता है। यही सच्चा 'सुहृदभाव' सिद्ध करने का फल है। पू.स्वामिजी सभी को वह सरलता से करा रहे हैं तो हमें स्वयं का ही गुरु बनकर अंतर्दृष्टि करके, भितर में टटोल कर स्वामिश्रीजी को सच्ची प्रार्थना किया करनी, जिससे कि जीते जी ऐसा दिव्यभाव प्रगट हो जाए और ज्योति प्रगटते अखंड निर्विकल्प समाधि का सुख मिला करे।

प.पू. काकाजी महाराज
जनवरी 1958

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

हर साल की तरह इस बार भी प.पू. काकाजी की जंयती स्मृति हेतु 15 मई'96 से 12 जून'96 तक का जपयज्ञ का अनुष्ठान रखा गया... आत्मा की भूख तृप्त करने पूरे साल की बैटरी चार्ज करने रिफ्रेशर कोर्स के रुप मे यह अनुष्ठान है। छःसाल पहले जब यह शुरु किया, तब ऐसी कल्पना नहीं थी कि एक महीने के इस भजन, कथावार्ता के बिना सारे साल हर एक अधूरापन महसूस करने लगेगा। अब तो सभी खूब आतुरता से जैसे इस महीने का इंतजार करते हैं। एक दिन भी जो इस भजन में आ जाता है, उसे इतना आनन्द आता है कि वो फिर रोज का सदस्य बन जाता है। भक्तों की ऐसी उमंग देखकर प.पू. गुरुजी बार-बार यही कहते हैं कि 'प.पू. काकाजी हम सब को यूँ भजन करते देखकर कितने खुश होते होगें?'

एक महीने के इस अनुष्ठान में रोज सुबह 6.30 से 8.15 तक का कार्यक्रम रखा गया... आवाह्न श्लोक व स्वामीनारायण की गूँज से अनिर्देश का वातावरण अलौकिक दिव्यता में बदल जाता। धून के पश्चात् रोज प.पू. गुरुजी कभी स्वामी की बातें, वचनामृत, पत्र संजीवनी या स्वामिनारायण कथामंगल पढ़वाकर उन्हें सरल भाषा में अलग-अलग उदाहरण देकर समझाते और कभी उनके लाक्षणिक ढंग से भक्तों को अनगिनित स्मृतियाँ देते। इस एक महीने के अनुष्ठान में प.पू. काकाजी के अभिप्राय की जो भक्ति बताई, उसका निचोड़ रुप देने की यहाँ चेष्टा करी है, ताकि हम इन मुद्दों का मनन-चिन्तन करते रहें.....

- **स्वरुप के आगे-पीछे घूमने से कुछ नहीं मिलेगा। संबंध वाले भक्तों के दास बनकर रहने से प्राप्ति है।**
- **ऐसे व्यक्ति के साथ उठक-बैठक, संग रखना जो साधु के साथ हमारा संबंध दृढ़ कराये।**
- **बुद्धि लगाकर किसी Problem का Solution आया होगा तो वह temporary होगा, पर भजन करके जो result आएगा वो permanent होगा।**
- **पू. काकाजी जैसे बादशाह पुरुष के पास बैठकर एक ही माला करेंगे तो करोड़ माला का फल मिलेगा।**
- **स्वामिनारायण मंत्र भी चाहे कितना ही करो, पर जब तक living form में स्वामिनारायण को अंखड धारे हुए प्रगट संत से सम्बन्ध नहीं होगा, तो हमारी चेतना ब्रह्मरुप नहीं होगी।**
- **मनमानी करना वो विषय !**
- **इतना ऊँचा-आध्यत्मिक ज्ञान इतनी सरल भाषा में स्वामिनारायण के सिवा और किसी ने नहीं**

दिया....स्वामी की बातें आज 200 साल के बाद भी **practical** हैं।

- दूसरों को मान दे पाए- वो सच्चा निर्मानीभाव....
- दूसरों को मान मिलता हो, तारीफ होती हो, तब तनिक भी **irritation** ना हो, जलन ना हो, क्षोभ ना हो, मायूस ना हो-यह सब ना हो, बल्कि खुशी हो- वो सच्चा निर्मानीभाव....
- कोटि तप, ज्ञान, धर्म, नियम, व्रत, योग, दान, यज्ञ, की कोई **value** नहीं.....बस हम साधु के साथ जुड़कर उसके पास सरल रहकर सम्बन्ध कर लें-उसमें सब आ गया।
- परवाह एक ही चीज की करनी है कि मेरा संत के साथ-सरलता का पक्का सम्बन्ध हुआ या नहीं?
- गल्ती भले हो जाए, पर उसे **justify** करके अपना बचाव ना करे।
- प्रगट की निष्ठा यानि-गुणातीत स्वरूप की गोद मिली, हमारे जीवन के पल-पल के कर्ता, नियंता, प्रेरक वही हैं-वो निष्ठा।
- कोई छोटा या बड़ा प्रसंग बने या हमारे प्रकाश आए, उसकी हमें गुदगुदी हो या हम **distrub-hurt** हो जाएँ तो जरूर समझना हमारे भीतर की कोई वृत्ति या दोष का दर्शन कराने महाराज ने ही रखा है।
- प्रसंग पर अगर प्रभु को कर्ता-हर्ता मान लेंगे तो प्रभु की प्रसन्नता मिल जाएगी। **bonus** मिल जायेगा... हम आध्यात्मिकता में एक कदम आगे चले जाएगें। कोई परिश्रम किए बिना हम आगे बढ़ते जाएगें। यह अरबों रुपये की बात करी।
- प्रसंग या कोई घटना बनने पर **disturb** हो जाने के बजाय स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजन करके, पीछे हठ करके आजमा कर तो देखो, **immediately** प्रसंग मे बदलाव आ जाएगा।
- अपनी ग्रंथियाँ, **preconditions** पूर्वाग्रह छोड़कर मिलजुल कर हम कार्य करें तो पू. काकाजी हमें गुले-गुलज़ार रखेगें।
- हमारी कथनी और करनी में अतंर नहीं होना चाहिए। जितना अपना **practical** जीवन, उतना ज्ञान। अपनी निष्ठा पक्की होगी, तो ही दूसरों पर प्रभाव पड़ेगा।
- सत्संग में आते ही साधु तुम्हें ईशारा देगा कि तुम इसके संग रहो तो तुम्हारी गाड़ी राजमार्ग पर दौड़ेगी... वह हमारे लिए **short cut** होता है, पर हम उल्टा ही करें, जिसका संग करने कहा हो, उससे ही वैर बुद्धि रखें....तो?
- जो आज्ञा में रहेगा, पंचवर्तमान पालेगा, उसे कहना नहीं पड़ेगा कि हमें दृष्टि में रखना.....
- अभ्यास से हम कितने गुण पाएंगे? साधु के साथ जुड़ जाएंगे तो सारे गुण **transfer** हो जाएंगे। जैसे **computer** में **floppy joint** करें तो **with in a second** सारा **matter transfer** हो जाता है।
- सत्संग में ग्राम्यवार्ता यानि **gossip** फलां ऐसा, फलां वैसा... महाराज को बिल्कुल पसंद नहीं।
- हम महिमा नहीं समझते, इसलिए दुसरों के दोष देखते रहते हैं और फिर अधजले रहा करते हैं। प.पू. काकाजी हर एक को ब्रह्मस्वरुप करने ही वाले हैं। हमें क्यों किसी का देखना?
- हम ज्ञान प्रधान हो जाते हैं, सत्पुरुष गोण हो जाता है। असल में अवतार विभूति जो करे वो धर्म ! उसकी मर्जी में जो जुड़ जाए-वो भक्ति ! जैसे अर्जुन ने कृष्ण के अभिप्राय की भक्ति करी। मनमानी करी हुई भक्ति अहम् बढ़ायेगी।
- अपने दोष की पहचान हो... अपनी गलती दिल से माने-वह अंतःकरण से-माया से परे का विचार है।
- स्वभाव टालने के लिए दिल की सच्चाई से रो-रोकर माँगना हमे पड़ता है कि हे महाराज ! मेरा टाल दो-मेरा टाल दो !
- साधु के साथ यदि लगाव हो तो कोई ऐसी चीज ही नहीं, जो ना हो सके।
- 'हम तो ऐसे ही रहेंगे। हमारा तो कुछ होने वाला नहीं है... बस जिन्दगी प्रसार कर देनी है वगैरह....' हल्के विचार नहीं करना। ऐसा जोग मिला है... साधु मिले हैं, वो पुरा कर ही देंगे।
- ऐसी बड़ी प्राप्ति हुई है। जितना मुनाफा बड़ा है, घाटा भी बड़ा है।

  गुण लो-दिव्यभाव रखो तो मुनाफा खूब बड़ा और इधर-उधर दुसरों के दोष देखो तो घाटा भी उतना बड़ा !
- सत्पुरुष की और निगाह रखकर जीने से भगवान वश

होते हैं।

- कैसे भी संजोगो में अपने ईष्टदेव के प्रति दिव्यभाव ही रहे-वो भक्त ! जैसे श्रीकृष्ण रण छोड़कर भागे, तब भी भक्तों ने तो 'रणछोड़राय की जय' बोली !
- स्वरूप मनुष्य चरित्र करता है, तो उसमें संशय हो जाता है। उसके हर चरित्र दिव्य माने जाएं... बल्कि सत्य माने जाएं। पू. काकाजी को गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के प्रति कभी विचार ही प्रसार नहीं हुआ कि शास्त्रीजी महाराज ऐसे क्यों कर रहे हैं?
- सत्संग थोड़ा भी करें, पर दिल की सच्चाई से करें-दिखावे का या शो-शा **business** वाला सत्संग नहीं करना !
- हमें जो प्राप्ति हुई है, उसकी गहराई का हमें पता नहीं, क्योंकि हमें मुफ़्त में मिला है। जगत में लोगों को मौत का कितना भय होता है.. जबिक हमें तो पू. काकाजी लेने आएंगे-कैसी निश्चिंतता..... !
- दास के दुश्मन हरि कभी नहीं हो सकते, वे जो भी कुछ करेंगे, हमारे अच्छे के लिए ही करेंगे।
- मन ना माने, दिल ना करे तब भी उसे छोड़ तो पायें ही नहीं-वह साधु पर अतिशय प्रीति। वच.म.37
- साधु चोट लगाने चाहे कितने ही कठोर वचन कहे तब भी वो मेरे हितकारी ! संत चाहे हमारा कितना भी तिरस्कार करे, पर तब भी हम उसका गुण लें। वह अतिशय हेत-अतिशय विश्वास !
- तर्क वितर्क, शंका-आशंका, मान्यताएं अपने आदर्श, **ism** आदि छोड़कर स्वरूप के पास सरलता रखनी है।
- चिपकना साधु में है.. मन से नहीं।
- क्रिया, स्वभाव, वृत्ति में नहीं डूबना। लय और लीन तो भगवान की मूर्ति में होना है।
- भगत को जगत पागल कहता है ! मन-बुद्धि, चित्त-अहम् की **clutches** से हम **free** होकर पागल नहीं होते-वो ही कसर है।
- संत की आज्ञा पालने से वासना जलती जाती है और अनुवृत्ति प्रगट होती है।
- साधु हमारी भीतर की गन्दगी साफ करता है, जैसे मां अपने बच्चे की **latrine** साफ करती है।
- संत की हर बात को सही मानना-वो हमने उसका भरोसा किया। अगर हम सही नहीं मानपाते तो वो हमारी छुपी नास्तिकता है। साधु की बात का विश्वास करेंगे तो फिर प्रभु अनुभव कराएंगे।
- पू. काकाजी, पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी जैसे पुरुष अगर कभी तुम्हें **specially** रोके तो चिंता नहीं करना-वो वहां तुम्हारा काम कर देंगे।
- अगर दूसरों के दोष देखते रहेंगे तो सारी जिन्दगी अधजली लकड़ी की तरह सुलगते रहेंगे। 'दिव्यभाव और महिमा' आनन्द में रहने की चाबियां हैं।
- भगवान की सत्ता को मानकर जो सह लेता है, पीछे हट कर लेता है, वो भगवान का हृदय बन जाता है।
- पानी का प्रवाह हमेशा नीचे की तरफ जाता है। पानी को ऊपर चढ़ाने के लिए मोटर चाहिए। वैसे ही वृत्तियों का प्रवाह नीचे की ओर जाता है, ऊपर चढ़ाने के लिए संतरूपी मोटर चाहिए।
- हम पू. काकाजी जैसे संत का सारा कारोबार चमड़े की आंख से देखते हैं-पर गोकुल गांव का पिण्डो न्यारो-वह चैतन्यस्वरूप हैं।
- अगर बड़े पुरुष को निष्कामी, निर्दोष,पवित्र मानेंगे तो हम बिना किसी साधन, निष्काम, निर्दोष, निर्मानी हो जाएंगे... ग.प्र. 58
- स्वरूप की हर क्रिया, चरित्र-स्वभाव भले हमें समझ नहीं आती हो, पर वो हमारी भलाई के लिए ही होती है।
- जितनी आज्ञा लोपते हैं, उतना ही दुःख रहता है और जितनी आज्ञा पालते हैं, उतना सुख होता है।
- निष्कामी पुरुष को आगे रखकर, उसकी ओर निगाह रखकर, उसकी मर्जी के मुताबिक उन्हें प्रसन्न करने जो भी कार्य-वो निष्काम कर्मयोग !
- भगवान कभी किसी को भूलें-ऐसा हो नहीं सकता। हमने अगर थोड़ा-सा भी उसका कुछ किया होगा तो वो हमेशा याद रखेंगे।
- अपने मन के बवंडरों के कारण संत से **distance** रखेंगे, तो भी उसकी यह कोशिश रहेगी कि तुम जुड़ जाओ-
- सहन करे - वो साधु
  भगवान रखे - वो साधु
- हम जहां जाएं, वहां हमारा प्रभाव पड़े, उसके प्रभाव में हम ना दबें। हमें पानी जैसा नहीं, अग्नि जैसा बनना है। पानी में जो भी कुछ डालेंगे, पानी उस रंग का हो

जायेगा। अग्नि में जो भी कुछ डालते हैं, वह खाक हो जाता है।

- **कसनी में आए तब भी अखंड दिव्यभाव रहे, भक्तों की महिमा समझकर सेवा करें-वो भक्त !**
- **भूखे रहना-शारीरिक कष्ट सहना-वो हमारी तपस्या नहीं, पर जिसके साथ हमारी नहीं बनती हो उसके साथ मिलजुल कर रहना-वो तपस्या। मन मारकर जीना-वो तपस्या।**
- **शब्द को मत पकड़ो बल्कि उसके पीछे का रहस्य पकड़ो।**
- **बौद्धिक उपायों से स्वभाव नहीं टलेंगे.... बच्चे मां-बाप के पास खिलौने लेने की ज़िद करते हैं, वैसे हमें प्रभु के पास स्वभाव टालने की ज़िद करके भजन करना।**
- **अपने नियम व स्वधर्म कभी भी छोड़ना ही नहीं। जो ऐसा करेगा वो कभी न कभी सत्संग से लुढ़केगा ही। कभी भी टिक नहीं सकेगा। वो कभी न कभी फंस जायेगा।**
- **सर्वोच्च कक्षा का साधु ऐसा होता है कि एकदम common level पर हमारे जैसा ही बनकर वो रहता है। कोई उसका कार्य समझ नहीं पायेगा। पू. काकाजी ऐसे जीये।**
- **जिसका चुभता हो उसे भगवान की मूर्ति के साथ याद करके भजन करेंगे तो स्वभाव पिघल जायेंगे।**
- **भजन एक ऐसी दवा है, जो सब कुछ पिघाल देती है। इसलिए विश्वास व भावना से भजन करना। formality से भजन नहीं करना। disturb mind में भजन का आधार पकड़े रखेंगे तो mind स्थिर हो ही जाएगा।**
- **सारे दिन व्रत करना-वह तप जरूर है। पर नित्य भूख से थोड़ा कम खाना-एक रोटी कम खानी 'सूक्ष्म तप' है। वह हम करें।**

इसी दौरान प.पू. गुरुजी ने वच. प्र. 54 प्र. 37, लोया 17, अत्यं-35, प्र. 59 ग.म. 29 का निरूपण करके खूब विस्तार से समझाया।

इस अनुष्ठान में एक अत्यधिक विशेषता की बात यह रही कि आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ लगभग 10-12 दिन तक पू. गुरुजी ने वर्तमान काल में चल रहे बुरे व्यसनों जैसे तम्बाकू, पान-पराग, धूम्रपान, शराब, प्याज आदि छोड़ने पर बहुत जोर देकर बातें करी... वास्तव में तो शिक्षापत्रि में स्वयं श्रीजी महाराज ने भी इन चीज़ों का सेवन करना वर्जित किया है। पू. गुरुजी ने इन चीजों से होने वाले नुकसान वगैरह के बारे में इतना विस्तारपूर्वक बताया कि आखिर कई मुक्तों तो ऐसा बोल उठे कि–'गुरुजी आप इन बातों को इतनी अधिक गरज से, दर्द से, अपनापन रखकर बार-बार हमें समझा रहे हो... शायद हम ना पिघलें पर अगर खुद तम्बाकू (पान पराग) बनाने वाली कम्पनी के मालिक यहां आपकी ये बातें सुनते, तो वे शायद अपनी कम्पनी तक यह कहकर बन्द कर दें कि-स्वामी ! आप इतने दुःखी ना हों, हम अपनी कम्पनी बन्द कर देते हैं। इसके साथ एक आश्चर्य की घटना यह बनी कि एक ओर पू. गुरुजी अपनी कथावार्ता में यह बात खूब भारपूर्वक कर रहे थे और दूसरी ओर इत्तफाक से इन्हीं दिनों देशभर में 'तम्बाकू बन्द' अभियान चला। अखबारों में इसी विषय पर बुहत ज़ोर-शोर से तम्बाकू के सेवन का निषेध किया गया। पू. गुरुजी को तो इस बारे में कुछ पता भी नहीं था। 4-6-96 की सांध्य टाइम्स पेपर में ऐसी headline आई कि **तम्बाकू के सेवन से एक साल में एक करोड़ व्यक्तियों की मृत्यु** ! सभी हरिभक्तों को ऐसा हुआ कि पू. गुरुजी की बात का हमें विश्वास आये, सो आखिर हमारी भलाई के लिए भगवान ने अखबार वालों से लिखवाया... इसी बात का reflection और भी पक्का तब हुआ जब अक्षरपुरुषोत्तम संस्था से प्रकाशित हुई मैगज़ीन 'स्वामिनारायण प्रकाश' के जून अंक में ही 'पान-मसाला-हल्का जहर' title देकर detail में पूरा article छपा। जैसे स्वयं महाराज ने ही हर जगह control लेकर अपनी मर्जी बताई हो।

इस प्रकार पू. गुरुजी ने तो व्यावहारिक व आध्यात्मिक दोनों प्रकार की खुराक देने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। बारीक-बारीक चीज़ों का भी दर्शन कराया.... अब यदि हम उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को लेकर जीने लग पड़ेंगे तो निहाल हो जाएंगे और इस अनुष्ठान के पीछे पू. गुरुजी का एक यही उद्यम रहा कि भक्तों सत्संग से जुड़े रहें। सत्संग यानि संत के साथ व सत्संगियों के साथ जुड़े रहें और स्वामिनारायण भगवान-गुणातीत स्वरूपों की मर्जी जानकर अपना जीवन सफल करें..... सो, प.पू. गुरुजी को इस अपार कृपा के लिए कोटि-कोटि प्रणाम.....

✡✡✡✡✡

8 जून '96–शनिवार प.पू. काकाजी का प्राकट्य दिन मनाने 'अनिर्देश' में सभी एकत्रित हुए। सभी हरिभक्त प.पू. काकाजी की जयंती का लाभ ले सकें और उनके प्रति अपनी भक्ति अदा कर सकें,इस हेतु प.पू. गुरुजी ने शनिवार शाम को यह उत्सव मनाने का निर्णय लिया....

प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने गुजरात, बम्बई, पंजाब से कई भक्त आए.... प.भ. राकेशभाई, प.भ. ऋषिभाई, प.भ. विनोदभाई, प.भ. सुबोधभाई ने प.पू. काकाजी की स्मृति कराते भजन गाकर सभी को भक्ति से तरबोर कर दिया... इस बार प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी का अभिप्राय की भक्ति बताने 'जेवा में निरख्या रे' किताब में से कुछ प्रसंग पढ़वाए और उनका निरूपण किया। साधना मार्ग में विघ्न डालती कई रुकावटों का इन प्रसंगों द्वारा दर्शन कराया... प्रसंगों का निरुपण करते हुए प.पू. गुरुजी ने बात करी-

● अतिशय बड़े पुरुष को निर्दोष मानेंगे तो हम.. निर्दोष हो जाएंगें... उसके अन्दर दिव्यभाव अखंड रखेंगे-निर्दोषभाव रखेंगे, निष्कामी मानेंगे तो वो गुण automatically अपने अन्दर आ जाएंगे।

● व्यापक में श्याम का दर्शन करना... ब्रह्म का लक्षण है-वो व्यापक है। जहां भी याद करेंगे-वो हैं ही

फिर एक प्रसंग पढ़वाते हुए प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी द्वारा दिए तीन सूत्रों पर खूब जोर दिया...

(1) हम लायक नहीं, फिर भी ब्रह्मविद्या की college में admission पू. काकाजी ने हमें दिया है। (2) इस college कालेज का कायदा है किसा का देखो नहीं, फिर भी हम देखते हैं और वे हमें get out नहीं करते। (3) यह जो हम दोष देखते हैं, उसका प्रारब्ध हमें न लगे उसके लिए प्रायश्चितरूप प्रार्थना भी पू. काकाजी करते रहते.....

ये तीन बातें प.पू. काकाजी ने किसी सेवक को कही हैं। आज देखा जाए तो सत्संग में अधिकतर सभी के लिए यह उत्तर है। प.पू. गुरुजी ने कृपा करके इन प्रसंगों द्वारा कईयों को एक राह दिखाई कि प.पू. काकाजी की हमसे क्या चाहना है और हम क्या करते हैं?

सभा समाप्त होने के बाद सभी ने प.पू. काकाजी की जयंती निमित्त प्रसाद लिया... इस प्रकार हरिभक्तों ने भक्ति अदा करके आध्यात्मिक भूख तृप्त करी....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

514 जैसा है वैसा कह दें,तो तुरन्त माना नहीं जाएगा। सो मन को (भक्तिरूप क्रिया में) लगाए रखना, तो धीरे-धीरे बल मिलेगा और समझ आएगी।

प्र-5, 348

515 कोई कहेगा कि-'मुझे जैसा है, वैसा कह दो-मैं वैसे करूंगा,' लेकिन बड़े हों-वे जानते हैं कि भले ही कह रहा है, पर इससे होगा नहीं, और-कोई कहे नहीं, लेकिन उसका भी जानते हैं कि यह कहता नहीं, पर उससे हो पाएगा।

प्र-5,349

516 उपासना, आज्ञा और साधु पहचानने-ये तीन बातें अवश्य चाहिए। आज्ञा में धर्म, नियम, व्रत, दान, तप सब कुछ आ जाता है।

प्र-5,351

517 साधु सच्चे हैं, उसमें असाधु की बुद्धि हो, वह विपरीत भावना है, यह बात अटपटी-सी है। उस साधु को अन्य साधु की अपेक्षा देखें तो पहचाना जाए....

प्र-5,352

518 अत्यं प्रकरण का तैतीसवां वचनामृत पढ़ाकर बात करी कि ऐसे बड़े हों, फिर भी विषय के संग में ठीक रहा जाता है, वह बड़ों की कृपादृष्टि है।

प्र-5,353

519 किसी बात की अंतर में चिंता आये तो भगवान पर डाल देना। उनमें अनंत कलाएं हैं। उस पर बली तथा वृन्दा के छल की बात करी।

प्र-5,354

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 11.7.96 गुरुवार – एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053